AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

भारत के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महिला शिक्षा की चुनौतियॉ एवं संभावनाएँ

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. राम दास
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग,
ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय
लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध सार

दुनियॉ के तमाम देशों नें आज महिलाओं को बराबरी का हिस्सा देकर अपने देश की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं राजनैतिक स्थिति में काफी सुधार कर चुके हैं। समाज में बराबरी का हिस्सा पाकर महिलाओं ने चॉद तक अपना परचम लहरानें में कोई कसर नही छोड़ी है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यदि बात की जाय तो महिलाएँ आज भी समाज की मुख्य धारा में नही आ पाई हैं, जिसके लिए घर से लेकर समाज तक इसके लिए उत्तरदायी है। जब–जब महिलाओं को उनके अधिकार प्रदान किये गये तब–तब महिलाओं ने अपनी ताकत का लोहा मनवाया है। भारत को यदि देश दुनियॉ के सामनें मजबूत स्थिति में लाना है तो महिलाओं को सभी क्षेत्रों में भागीदारी देनी होगी तभी देश प्रगति की राह पर तेजी से आगे बढ़ सकेगा।

मुख्य शब्द

भारतीय परिदृश्य, महिला शिक्षा, शैक्षिक चुनौतियॉ, शैक्षिक संभावनाएँ.

प्रस्तावना

भारत देश की स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की विकास में भागीदारी के लिए जोर–शोर से कई नीतिगत प्रयासों की शुरूवात की गयी लेकिन उनकी सहभागिता का दायरा हमने इतना सीमित कर रखा था कि वह कंधे से कंधा मिलाकर चलनें में सक्षम नही बन पायीं। आज पूरी दुनियॉ के सामने भारत समावेशी विकास का एक मुख्य केन्द्र बनकर नेतृत्व करनें के लिए तैयार है। इस दृष्टिकोण से भारतीय महिलाओं को भारत मे ही नही अपितु सम्पूर्ण विश्व के विकास में भागीदारी सुनिश्चित करनें के लिए नजरअंदाज नही किया जा सकता है। आज यदि भारत शैक्षिक, सामाजिक एवं वैश्विक अर्थतंत्र का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है तो उसका श्रेय कहीं न कही भारतीय महिलाओं को ही जाता है, यह बात अलग है कि उनके इस श्रेय का बखान हम किसी मंच पर करनें से हिचकिचाते है। यह सर्वविदित है कि किसी भी राष्ट्र मे समानता एवं समृद्धि लानें के लिए महिलाओं को शिक्षित एवं सशक्त बनाना सबसे प्रभावशाली उपाय है विगत वर्षों मे महिला शिक्षा को आगे बढ़ानें में सरकार के साथ–साथ प्राकृतिक न्याय में विश्वास करनें वाले जनमानस नें काफी महत्वपूर्ण प्रयास किये है जिसके फलस्वरूप परिवर्तन की लहर आज हर क्षेत्र में दिखाई देनें लगी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय प्रबन्धन, राजनीति, सेना, पुलिस आदि ऐसे अनगिनत क्षेत्र हैं जहाँ महिलाएँ ऊँचे पायदान पर पहुँचकर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है।

महिलाओं की स्थिति

हजारों सालों से पुरूष प्रधान समाज की दकियानूसी सोच का शिकार होनें की वजह से महिलाएँ अपने अस्तित्व के लिए आज भी संघर्ष कर रही हैं। भ्रूण हत्या, सती–प्रथा, बाल–विवाह जैसी अनगिनत कुप्रथाओं से बच–बचाकर किसी तरह जब वह अपने आपको समाज में स्थापित करना चाह रही हैं तो चंद घटनाओं का सहारा लेकर पुरूष प्रधान समाज का एक बड़ा तबका आज पूरे दल–बल के साथ सड़कों पर कुहराम मचा रहा है। कुछ व्यक्तियों के चारित्रिक पतन सम्बंधी घटनाओं का समर्थन किसी भी तरह से जायज नही है। इन घटनाओं के आधार पर पूरे समाज का सामान्यीकरण कर देना कहीं से भी न्यायसंगत नही है, किन्तु हैरत की बात यह है कि इस भेड़चाल में समाज को दिशा दिखाने वाले प्रबुद्ध लोग, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिन्टमीडिया, सोशल मीडिया आदि अनेक समूह एवं संगठन बिना सोचे–समझे इन घटनाओं को इतना बढ़ा–चढ़ा कर प्रचारित–प्रसारित कर रहे हैं जैसे भारत में ऐसी घटनाएँ पहली बार घटित हुई हो। महिलाओं की शिक्षा के विरोध में अपने सुर बुलंद करनें वाले यह नही सोच पा रहे है कि इस कृत्य से हमारे समाज का कितना नुकसान होगा। जिस भारतीय समाज की परम्परा एवं संस्कृति में महिलाओं को पूज्यनीय एवं देवी स्वरूपा समझा जाता है उसी समाज में पुरूष सत्ता का डंका पीटने वाले आज कुछ घटनाओं को आधार बनाकर पूरे देश की महिलाओं की शिक्षा को शक के कठघरे में खड़ा कर रहे है। आज 21वीं सदी में प्रगतिशील समाज की श्रेणी में हमारी गिनती की जाती है ऐसी परिस्थिति में महिलाओं की शिक्षा पर तलवार लटका देना कहाँ का न्याय है? इस प्रश्न पर हमे गम्भीरता पूर्वक विचार करना होगा। सदियो से जिस तरह हम आधी आबादी के हक के साथ अन्याय करते आये है और आज भी हम मौका पाते ही अपना प्रभुत्व दिखानें से नही चूकते इसका उदाहरण हमें आज भी रोजमर्रा की जिन्दगी में आसानी से देखनें को मिल जाता है। हमारे इस असमानतावादी व्यवहार ने हमें व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कितना खोखला बना दिया है इस का हमें जरा भी एहसास नही हैं। पद, प्रतिष्ठा, हैसियत, शिक्षा मे भले ही महिलाओं का आज प्रतिशत बढ़ रहा हो किन्तु स्वतंत्र चिंतन, निर्णय एवं समान भागीदारी आज भी उनसे कोसों दूर है। सरकारी ऑकड़ों की नजर में महिलाओं की शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति आज भी चिंताजनक है, इसके साथ–साथ ग्रामीण, पिछड़े एवं आदिवासी क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति बद से बदतर बनी हुई है जिसमें सरकारी प्रयासों की आज भी बहुतायत गुंजाइश है।

महिला शिक्षा से सुधार

कहते है कि शिक्षा हमारे अन्दर से पाशविक प्रवृत्तियों को विनाश करके हमे इंसान बनाती है और जीवन को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जानें का कार्य करती है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी राष्ट्र की दशा एवं दिशा तय होती है। यह सब जानते हुए भी यदि हमने आधी आबादी को शिक्षा से ही वंचित कर दिया तो हम भारत को जो एक प्रबुद्ध एवं समृद्ध राष्ट्र बनानें का सपना देख रहे है वह पूरा होने से पहले ही धूमिल हो जायेगा, और यही नही इसका असर इतना व्यापक होगा कि हम विकास के हर क्षेत्र में फिर से सदियों पीछे चले जायेंगे, क्योंकि मानव जाति का अस्तित्व ही आधी आबादी पर टिका हुआ है जिनकी शिक्षा एवं सहभागिता का बिना सोचे–समझे हम मुखर होकर विरोध कर रहे हैं।

महिला शिक्षा में सरकार की भूमिका

देश की सरकारों द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए समय–समय पर कई योजनाओं की शुरूवात की गयी। इन योजनाओं का लाभ उठाकर महिलाओं की स्थिति में थोड़ा सुधार अवश्य हुआ है और उनके जीवन में कुछ सकारात्मक बदलाव भी देखने को मिल रहे हैं किन्तु इन योजनाओं के क्रियान्वयन में आम जनमानस की नीयत सबसे अधिक मायने रखती है। यही कारण है कि आज भी सरकारी आँकड़ों और वास्तविकता में विरोधाभास आसानी से देखनें को मिल जाता है। महिलाओं की स्थिति में सुधार बेहतर भविष्य का द्योतक है। इसी आशा के साथ हमें आम जनमानस एवं सरकार के साथ मिलकर नीतिगत पहलुओं में समान भागीदारी दिलानें, उनके महत्व को जाननें–पहचाननें, देश की समृद्धि एवं प्रगति हेतु विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित करनें के लिए अपनी सोच का दायरा

बढ़ानें के लिए हमें कृतसंकल्पित होना होगा तभी एक बेहतर, सशक्त, समृद्ध एवं समावेशी समाज की संकल्पना साकार हो सकेगी इसके साथ सामाजिक समानता के लिए ''सबका साथ, सबका विकास'' को धरातल पर मूर्त रूप मिल सकेगा।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महिलाओं की स्थिति में सुधार की प्रक्रिया आज सरकारी एवं गैर–सरकारी प्रयासों से बेहतर हुई है। समाज में जो महिलाएँ हासिये पर थी वह आज मुख्य धारा की ओर आगे बढ़ रही हैं। शैक्षिक पिछड़ेपन के कारण आज कुछ क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति जस की तस बनी हुई है चूंकि महिलाओं की बदलती हुई स्थिति से परम्परागत एवं रूढिवादी सोच के लोग उनके विकास में बाधक बन रहे है। परिवार, समुदाय एवं समाज से संघर्ष करते हुए आज आधी आबादी ने यह साबित कर दिया है कि आने वाले समय में उनका भविष्य उज्ज्वल होगा तथा हर एक क्षेत्र में वह पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर देश की बदलती तस्वीर की साक्षी बनकर प्रगतिशील समाज का हिस्सा बनेंगी।

सुझाव

भारत के शैक्षिक विकास से ही हम आने वाले भविष्य को बेहतर कर सकते है। जो राष्ट्र जितना अधिक शिक्षित होगा उतना ही वह अपने देश के निवासियों को खुशहाल कर सकता है। आज जहाँ हम सूचना क्रांति के युग में वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर रहे है ऐसी स्थिति में यदि हमने आधी आबादी को शामिल नही किया तो अन्य देशों से सदियों पीछे हो जायेंगे। आज समय आ गया है कि बिना किसी भेदभाव के हम महिलाओं को हर क्षेत्र में भागीदार बनायें तथा एक सम्मिलित प्रयास से देश को प्रगति पथ पर आगे करनें में प्रयासरत हो।

सन्दर्भ सूची

1. अल्तेकर,(2005) *''दि पोजीशन ऑफ वुमन इन हिन्दु सिविलाइजेशन'',* मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली, पृ. 18–25।
2. अग्रवाल अंजू, ए.डी. (1989), *''वुमन इन रूरल सोसाइटी'',* वोहरा पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, इलाहाबाद, पृ. 9–11।
3. आहूजा, आर. (2013), *''रिसर्च मैथडोलॉजी'',* रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृ. 28–30।
4. अनुराधा, के. (2010), *''जेण्डर एण्ड डेवलपमेंट'',* अध्ययन पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली, पृ. 45–49।
5. बी.डी.यू.(2004), *''वुमन एजूकेशन इन ट्वेन्टी फर्स्ट सेन्चुरी'',* अनमोल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ. 11–13।
6. बी.के.एस.(2006), *''वुमन इम्पावरमेंट थ्रू सेल्फ हेल्प ग्रुप'',* अध्ययन पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली, पृ. 16–24।
7. बादल, बी.एस. (2009), *''जेण्डर सोसल स्ट्रक्चर एण्ड इम्पावरमेंट'',* रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृ. 29–30।
8. भण्डारी, आर. (2010), *इण्टरप्रिन्योरशिप एण्ड वुमन इम्पावरमेंट,* अल्फा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ. 79–83।

––==00==––